Q.3. भक्ति काल को स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है?

हिन्दी साहित्येतिहास में संवत् 1375 से 1700 तक का समय भक्ति काल के नाम से जाना जाता है भक्तिकाल कहने का आशय ही यह है कि यह युग भक्ति भावना से ओत-प्रोत था।

भारत के इतिहास में यह समय अत्यंत निराशाजनक था। हिन्दू जाति के पास ~~अब~~ अपने आत्माभिमान, पराक्रम और शौर्य प्रदर्शन का बल नहीं था। मुसलमानों के आगमन के साथ ही हिन्दू जाति गहन अंधकार में डूब गयी। हिन्दू जाति के सामने उनके धर्म का संकट होने लगा। मुसलमान अपने धर्म का प्रचार प्रसार और शोर से कर रहे थे हिन्दू जाति की संस्कृति ~~पर~~ भी ~~ख~~ खतरे में थी। शासन की बागडोर मुगलवंश के हाथों में थी इसलिए भारतीय हिन्दू के सामने भगवान की दया एवं शरण के सिवा कोई दूसरा मार्ग न था। ~~ऐसे~~

ऐसे ही समय में भक्ति की स्त्रोतस्विनी दक्षिण भारत में प्रवाहित हो रही थी। एक आशा की किरण उनके सामने आयी। धीरे-धीरे समूचे उत्तर भारत में भक्ति की लहर दौड़ गयी। इस भक्ति की धारा प्रवाहित करने का श्रेय- वल्लभाचार्य रामानुजाचार्य विष्णु स्वामि को जाता है। उनके इस भक्ति मार्ग ने भक्ति आन्दोलन का रूप ले लिया।

भक्ति की जो धारा प्रवाहित हो रही थी उसमें भगवान के रूप एवं गुणों के आधार पर निर्गुण एवं सगुण दो धाराएँ ~~बन~~ थी।

निर्गुण भक्ति में भगवान के निराकार रूप को ~~स्तुत~~ स्तुत किया गया। इस निर्गुण भक्ति के भी दो प्रकार थे एक संत कवियों तथा एक प्रेममार्गी सूफी संत कवियों का।

संत कवियों में कबीर रैदास नानक, ~~दादू~~ आदि आते हैं उनकी रचनाएं हृदय की सच्ची अनुभूति थी। इनके द्वारा लिखा गया काव्य हिन्दू और मुसलमानों दोनों को ग्राह्य था।

~~सूफी संत~~ जहाँ एक ओर संत कवि हिन्दू और मुसलमान के बीच परस्पर विरोधी भावना को खत्म करने की चेष्टा कर रहे थे वहीं दूसरी

और सूफी संत कवि मुसलमानों और हिन्दुओं के बीच रागात्मक संबंध स्थापित करना चाहते थे। इन सूफी कवियों में जायसी, कुतुबन, मंझन, घनानंद, उसमान आदि श्रेष्ठ थे। इनके द्वारा रचित काव्य अत्यंत श्रेष्ठ एवं उत्तम है। भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य को श्रेष्ठ बनाने का श्रेय बहुत कुछ इन सूफी कवियों को जाता है। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति को खोने से बचाया है।

निर्गुण भक्ति के बाद सगुण भक्ति की धारा भक्तिकाल के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें में दो आधार थे - 1. राम भक्ति शाखा एवं 2. कृष्ण भक्ति शाखा।

इन दोनों शाखाओं के प्रवर्तक वैष्णव आचार्यों ने भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राम भक्ति का प्रचार करने वाले प्रमुख प्रवर्तक रामानंद थे तथा कृष्ण भक्ति के प्रवर्तक वल्लभाचार्य इन दोनों वैष्णव आचार्यों ने संस्कृत का मोह त्याग कर लोकभाषा में अपने सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार किया।

रामानंद के शिष्य तुलसीदास ने भक्तिकाल को अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनके द्वारा रचित रामचरितमानस हिन्दी साहित्य के साथ-साथ समस्त हिन्दू जाति के लिए वरदान साबित हुआ है। रामचरितमानस एक काव्य ही नहीं बल्कि धार्मिक ग्रंथ भी है। इसमें इन्होंने कवित्व और दर्शन का अद्भुत सामंजस्य स्थापित किया है। राम को शिव का एवं शिव को राम का भक्त बनाकर इन्होंने शैव और वैष्णवों के बीच की गहरी खाई को समाप्त किया। तुलसीदास की सबसे बड़ी विशेषता है समन्वय की भावना। इन्होंने 'पुरुषोत्तम राम' की जो प्रस्तुति की है वह अनोखी है।

कृष्ण भक्ति के प्रवर्तक वल्लभाचार्य थे। वल्लभाचार्य के शिष्य सूरदास थे। कृष्ण भक्ति शाखा में सूरदास श्रेष्ठ हैं। सूरदास ने श्रीकृष्ण के

बाललीलाओं से लेकर विरह एवं संयोग की प्रस्तुति की है वह अत्यन्त दुर्लभ है सूरदास ने श्रीकृष्ण के सगुण रूप को आलंबन बनाया। ~~सूरदास के अतिरिक्त~~ वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने कृष्ण भक्त के प्रमुख कवियों को मिलाकर अष्टछाप की स्थापना की।

~~हिन्दी साहित्य इस प्रकार भक्तिकाल है~~

हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन काव्य में इस प्रकार कुछ ऐसी विशेषताएँ पायी जाती हैं जो अन्य काल में नहीं-

1. भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की रक्षा।
2. समन्वय की भावना
3. धार्मिक भावनाओं और कवित्व का अद्भुत सामंजस्य।

अतः डॉ० श्यामसुन्दर दास ने कहा है-

"जिस युग में सूर, तुलसी, जायसी कबीर जैसे रस सिद्ध कवियों और महात्माओं की दिव्य वाणी उनके अन्तःकर्णों से निकलकर देश के कोने-कोने में फैल गयी थी। ~~कि~~ उसे हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल कहा गया। निश्चित ही हिन्दी साहित्य यह युग स्वर्ण युग है।"

निष्कर्ष- भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का एक ऐसा काल था जिसमें भक्ति की धारा प्रवाहित होने के साथ-साथ ऐसी अमर रचनाएँ की गयी जिससे आज भी हम गौरवान्वित महसूस करते हैं। और यह युग स्वर्ण युग है जो सर्वथा उचित प्रतीत है।